इनमें से कौन है मेरा भाई?

सूरज ढल रहा था। चिड़ियों की चिहचिहाहट दूर गगन तक सुनाई दे रही थी। हवों के झोंके पेड़ की पत्तियों को अपने साथ बहा लेजा रही थी। सभी पशु - पक्षियों अपनी रहने की स्थान में वापस जा रही थी और मैं यहाँ अकेला अपनी टूटे हुए सपनों को समेटकर उन्हें देखती रही थी। ऐसा लगा रहा था मानों मन में किसी ने भारी पत्थर रख दिया हो। मुझे अब भी याद है वो दिन जब राम ने पहली बार मेरी हाथ थामी थी और मेरी आँखों में विश्वास जगाकर कहा था 'यकीन कर सकती हो मुझपर'

मेरी इस कहानी का
शुरुवात इसी पेड़ के नीचे से
हुआ था। यह तब की बात है
जब मैं अठारह साल की थी।
एक छोटी सी परिवार की लाड़ली
बेटी थी मैं, पढ़ाई में ठीक ठाक
और मौज मस्ती करना मेरी फर्ज
थी। लेकिन यह मौज-मस्ती ज्यादा
दिन नहीं रही। एक चाँदनी रात,
पूरी दुनिया शांत थी और सभी
अपने-अपने नींद में मस्त थे।
अचानक मैने काँच की टूटने की
आवाज सुनी। मन में झटका सा
लगा। मैं फटाफट फटाफट बिस्तर से
उठी और माँ-पापा की कमरे
की ओर गई। पापा मम्मी पर
चिल्ला रहीं था और माँ शांत से
रही थी, उनके आँखों से आँसू

रुकने का नाम नहीं ले रही थी।
कितनी डरी थी मैं उस दिन।
मन में तब एक ख्याल पैदा
हुआ कि मैं अपनी दुल्हा खुद
ढूँढूँगा खोजूँगा मगर क्या ऐसा
दुल्हा मुझे मिलेगा जो अपनी पत्नी
की सुख दुख को समझेगा,
जो एक भाई की तरह अपनी बहन
की ख्याल रखेगा? इन सब का
एक जवाब था राम! मेरी भाई।
दीदी का बेटा। राम एक शरमीला किस्म
का इंसान था। उसके आँखों में
एक अनोखा चमक था। पतला
बदन और सावला शरीर सभी
लड़कियों को आकर्षित करने वाली
रूप थी। माँ-पापा के लड़ाई के बीच
उन्हें मुझपर ध्यान देने की
समय नहीं और शायद यही कारण

था कि मैं दिन-पे-दिन मैं पढ़ाई में पीछे जा रही थी। माँ पापा के बीच लड़ाई होने के कारण माँ ज्यादातर दिन मुझे मामा के घर छोड़ देती थी।

मामा चौबीस साल के मोटे शक्ल के इंसान थे। परिवार में सभी उन्हे बोहत पसंद करते थे। वह माँ की भाई होने के साथ साथ एक अच्छे दोस्त भी थे। बचपन से मामा ने मुझे खूब प्यार दिया था और जब भी घर आते थे तो मेरे लिए तोफें लाते थे। एक बार माँ - पापा के बीच फिर से लड़ाई हुई और मुझे मामा के घर रहना पड़ा।

अगले दिन सुबह मेरी मोबैल में मामा का एक संदेश

देखा। मैंने खोल कर देखा,
मुझे अपनी आँखों पर विश्वास
नहीं हो रहा था और मानो पूरी
आँखों में अंधेरा छा गया। मेरी
दिल जोर से धड़क रही थी और
जीभ पूरी तरह से सूख गई थी।
मेरी नहाते हुए किसी ने मोबैल में
खींच ली है, मैंने एक और बार
खोल कर देखा, "नहीं मैं नहीं हो
सकती, मामा ऐसे नहीं कर सकते,"
आँखों से पानी नहीं रुख रही
थी। अचानक फोन की घंटी बजने
लगी, मेरी धड़कने बढ़ रही थी, हाँ
यह मामा ही है। मैंने फोन उठाया।
काँपते हाथ और भारी दिल के साथ:
"तुमने देख लिया होगा न! और
शायद तुम्हे समझ में आ गया
होगा कि अब क्या करना है।"

मैं कुछ कह नहीं पा रही थी और मैने फॉन काट दी। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मैं अभी माँ पापा को भी नहीं बुला सकती थी उन्हे अपनी मुश्किलों सुलजाने की समय नहीं है तो मेरी क्या सुलझाएगी।

मैने राम को सब कुछ बता दिया। मैं उसे अपने से ज्यादा विश्वास करती थी। उसने मुझसे किसी और को न बताने को कहा। मेरी मन अब शांत हो गई थी, कोई तो है जो मुझे समझेगा। मुझे राम पर गर्व था। उसने मुझे स्कूल की पीछे वाली पहाड़ी के पास बुलाया। और मैं वहा शाम होने से पहले पहुँची।

स्कूल में गानमेला चल रहा था इसलिए खूब शोर था। जब

मैं वहाँ पहुँची तो राम वहाँ पहले से ही उपस्थित था। मैंने 'राम' बुलाया। वह मुड़ा, मगर उसकी आँखों में वो पहले वाली चमक नहीं थी उसके मुँह में कुछ अलग भाव था। मैं ख्यालों में खो बैठी थी... अचानक किसी ने मेरी कंधे में हाथ रखा, तो देखा मामा पीछे पीछे खड़े थे, उनके आँखों आँखे जलक रही थी और उसने एक मोटी लकड़ी से मेरे सिर पर मारा और मुझे सिर्फ एक चीज उसके बाद याद था। राम की ओर सहायता का हाथ बढ़ाते मुझे देख वो माफी माँग रहा था। "राम मेरा भाई बचाओं मुझे।" जब होश आई मुझे तो सूरज ढलने वाली थी। कहने को कुछ भी बाकी नहीं था और जबान खोलना भी नहीं चाहती

थी। बस एक तितली की तरह उड़कर कहीं गायब हो जाना चाहती थी। कहीं दूर जहाँ किसी कि हाथ न पहुँचे। मेरे सामने ऊँची चट्टान थी कुछ न सोचा फिर मैं भाग कर उसके ऊपर तक चढ़ी और जोर से चिल्लाया

"इनमें से कौन है मेरा भाई"

मेरी आँखें डल रही थी, हवा की लहरें तेज हो गई थी। आँखों में एक सुंदर तितली उड़ती नजर आई मगर धीरे-धीरे वह भी गायब हुई। सिर्फ मन में एक ही सवाल था इनमें से कौन है मेरा भाई ? एक ऐसा भाई जो मुझे हर एक बुरी नजर से बचाए।